# महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०)-273165

अंक – 05 | समाचार – पत्रिका | मई, 2022



**सम्पादक मंडल**

**मुख्य संपादक**

डा0 विवेक प्रताप सिंह

(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)

**संपादक**

डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव

(वि.व. वि. – उद्यान)

डा0 राहुल कुमार सिंह

(वि.व. वि. – कृषि प्रसार)

डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय

(वि.व. वि. – मृदा विज्ञान)

श्री अवनीश कुमार सिंह

(वि.व. वि. – सस्य विज्ञान)

श्रीमती श्वेता सिंह

(वि.व. वि. – गृह विज्ञान)

**संकलन एवं सहयोग**

श्री गौरव कुमार सिंह

(कार्यक्रम सहायक - कम्प्यूटर)



वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

Email– gorakhpurkvk2@gmail.com

Website – http://www.mgkvk.in/

Facebook- https://www.facebook.com/mgkvk

Twitter – https://www.twitter.com/mgkvk

Youtube – https://www.youtube.com/channel/UCdZ8rAP_lDHeU6Ic5sNNYEw


## महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

### एक नजर में

कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रुप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता हैं।

## संदेश

**प्रो. उदय प्रताप सिंह**
**उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति**
**गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान**
**गोरखनाथ, गोरखपुर**

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

(उदय प्रताप सिंह)

# महाययोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर द्वारा मई, 2022 में किये गये कार्य

## 1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

| फसल/उद्यम का शीर्षक | संख्या | लाभार्थी |
|---|---|---|
| क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण | 02 | 47 |

## 2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

| फसल/उद्यम का शीर्षक | क्षेत्रफल हे०/ सं० | लाभार्थी संख्या |
|---|---|---|
| क) हरे चारे के लिए सौरघम ( यू.पी.एम.सी. 503) का प्रदर्शन | 4.0 | 30 |

## 4. प्रसार गतिविधियां

| शीर्षक गतिविधियां | संख्या | लाभार्थी |
|---|---|---|
| ख) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण | 8 | 12 |
| ग) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण | 16 | 16 |
| घ) मोबाइल सलाह | 11 | 420 |

# प्रथम पंक्ति प्रदर्शन

❖ दिनांक-09/05/2022 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र के वि.व.वि.- पशुपालन, डॉ. विवेक प्रताप सिहं, द्वारा हरे चारे के लिए सोरघम प्रजाति यू.पी.एम.सी. 503 का 4 हे. क्षेत्रफल में 30 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन हेतु हरा चारा उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण एवं बीज वितरण किया गया।

# कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक- 17/05/2022 को किसानो को "बैंगन फसल में टपक सिंचाई द्वारा अधिक उत्पादन" विषय पर केंद्र पर प्रशिक्षण दिया गया। इसी के साथ ही साथ कृषक उत्पादन सगठन एवं मृदा जाच आदि पर आवशयक जानकारी दी गयी।

❖ दिनांक 20/05/22 को केंद्र कि गृह विज्ञानं विशेषज्ञ श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा "खाद्य संग्रह" विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन कराया गया। जिसमे महिलाओ को खाद्य पदार्थो के संग्रह के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी।

❖ दिनांक 20/05/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं श्री जीतेन्द्र सिंह लैब टेकनिशीयन के साथ ग्राम चौकमाफी एवं जंगल बिहुली में मृदा जांच हेतु मृदा नमूने एकत्र किये।

❖ दिनांक 20/05/2022 को भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम (पी पी वी एफ आर ए) विषय पर एक दिवसीय कृषक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र चौकमाफी पीपीगंज में किया गया।

❖ केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक-21/05/2022 को कृषि राज्य मंत्री श्री बलदेव सिंह औलख की उपस्थिति में कृषि उपनिदेशक एवं संयुक्त निदेशक कृषि के साथ सर्किट हाउस, गोरखपुर में बैठक की गयी।

❖ केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा दिनांक- 21/05/2022 को जिलाधिकारी श्री विजय किरण आनंद की उपस्थिति में कृषि उपनिदेशक एवं किसान उत्पादक संगठन के पदाधिकारियों के साथ जिलाधिकारी सभागार, गोरखपुर में बैठक की गयी।

## प्रक्षेत्र भ्रमण

❖ दिनांक-17/05/2022 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र के वि.व.वि.-उद्यान विज्ञान, डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, वि.व.वि.- कृषि प्रसार डॉ राहुल कुमार सिंह एवं वि.व.वि.- मृदा विज्ञान डॉ संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा सब्जी एवं मक्का उत्पादक कृषक, चौकमाफी के यहाँ भ्रमण किया गया एवं कीट प्रबन्धन सम्बन्धित सलाह दी।

❖ दिनांक-27/05/2022 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र के वि.व.वि.-उद्यान विज्ञान, डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा सब्जी उत्पादक कृषकों, रानादिहा के यहाँ भ्रमण किया गया एवं कीट प्रबन्धन सम्बन्धित सलाह दी।

## रेडियो वार्ता

❖ यूनिसेफ उद्यमिता विकास विभाग उत्तरप्रदेश सरकार के तत्वाधान में प्रसारित कार्यक्रम आकार के अंतर्गत महिला उद्यमिता एवम विकास पर आधारित खास बातचीत डॉ श्वेता सिंह , गृह वैज्ञानिक , महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञानं केंद्र ,गोरखपुर , के साथ रेडियो गोरखपुर 90.8 पर।

## जून माह के मुख्य खेती-बाड़ी के कार्य

### फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

**गर्मी की जुताई व मेड़बन्दी :-**

❖ वर्षा से पूर्व खेत में अच्छी मेड़बन्दी कर दें, जिससे खेत की मिट्टी न बहे तथा खेत वर्षा का पानी सोख सके।

**धान :-**

❖ यदि मई के अंतिम सप्ताह में धान की नर्सरी नहीं डाली हो तो जून के प्रथम पखवाड़े तक पूरा कर लें. जबकि कालानमक धान की नर्सरी जून के तीसरे सप्ताह में डालनी चाहिए।

❖ धान की महीन किस्मों की प्रति हेक्टेयर बीज दर 30 किग्रा, मध्यम के लिए 35 किग्रा, मोटे धान हेतु 40 किग्रा तथा ऊसर भूमि के लिए 50 किग्रा पर्याप्त होता है।

❖ यदि नर्सरी में खैरा रोग दिखाई दे तो 10 वर्ग मीटर क्षेत्र में 20 ग्राम यूरिया, 5 ग्राम जिकं सल्फेट प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**मक्का :-**

❖ मक्का की बुवाई 25 जून तक पूरी कर लें. यदि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो बुवाई 15 जून तक कर लेनी चाहिए।

**अरहर :-**

❖ सिंचित दशा में अरहर की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह में, अन्यथा सिंचाई के अभाव में वर्षा शुरू होने पर ही करें।

❖ प्रभात व यू.पी.ए. एस .-120 शीघ्र पकने वाली तथा बहार, नरेन्द्र अरहर-1, नरेन्द्र अरहर-2, IPA 203 व मालवीय अरहर-15 देर से पकने वाली अच्छी प्रजाति है।

❖ प्रति हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 12-15 किग्रा बीज आवश्यक होगा।

❖ अरहर का राइजोबियम कल्चर से उपचारित बीज 60-75x15-20 सेंमी की दूरी पर बुवाई करें।

**मृदा विज्ञान**

❖ धान में यदि हरी खाद का प्रयोग करना हो तो रोपाई के तीन दिन पूर्व ही उसे मिटटी पलटने वाले हल से पलटकर, सड़ने के लिए खेत में पानी भर दें।

❖ भूमि में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परीक्षण करवा ले तथा भूमि में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करे।

❖ धान की रोपाई से पूर्व 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से जिंक सल्फेट खेत में मिला दें, परन्तु ध्यान रहे कि फॉस्फोरस वाले उर्वरक के साथ जिंक सल्फेट कभी न मिलायें।

❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों में बोवाई के लगभग 25-30 दिन बाद पौधों के बढवार के समय प्रति हेक्टेयर 15-20 किग्रा नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करें।

**मौनपालन**

❖ उचित प्रक्षेत्र का चयन कर ,मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें

❖ मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें

❖ माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें

❖ अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो

❖ गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए

**पशुपालन**

❖ खरीफ के चारे मक्का लोबिया के ली खेत की तैयारी करें।

❖ सूखे खेत को चरी न खिलाएं अन्यथा जहर फैलने का डर रहेगा।

❖ पशुओ के मुँह में छाले पड़ने पर सुहागा के चूर्ण को पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए या फिर पोटाश को ठंडे पानी में मिलाकर मुँह की सफाई करनी चाहिए। ग्लिसरीन और बोरिक ऐसिड का पेस्ट बनाकर जीभ के उपर छालों पर

लगानी चाहिए। मुँह को खोल कर मुँह के अंदर तथा जीभ पर मक्खन लगाने से आराम महसूस होता है। उपर लिखे सारे उपचार को दिन में तीन से चार बार परिस्थिति के अनुरूप दोहराते रहना चाहिए।

- ❖ थन कटना: थन कटने पर सबसे पहले उसे साफ़ पानी से धोकर उसके उपर एंटीसेप्टिक क्रीम का उपयोग करना चाहिए। अगर क्रीम नहीं हो तो पोटाश के पानी से धोकर फिटकिरी पीस कर लगाना चाहिए। दूध दोहने के पहले थन को पानी से धोना चाहिए और दोहने के उपरान्त नारियल तेल या सरसों तेल लगाना चाहिए।
- ❖ अन्तः एवं बाह्य परजीवी का बचाव करने के लिए पशुओं को पानी में दवा मिलाकर नहलाएं और दवा पिलाएं।
- ❖ गलाघोंटू तथा लंगड़िया बुखार का टीका सभी पशुओं में लगवायें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में खिलायें।
- ❖ पशु को लू एवं गर्मी से बचाने के लिए छायादार स्थान पर रखे एवं स्वच्छ जल की व्यवस्था करें तथा सुबह शाम नहलायें।
- ❖ परजीवी से बचाव के लिए पशुओं का उपचार करायें।

**सब्जी उत्पादन**

- ❖ बैगन, मिर्च, अगेती फूलगोभी की पौध बोने का समय है।
- ❖ भिन्डी, लौकी, खीरा, नेनुआ, करेली व टिन्डा की बोआई के लिए उपयुक्त समय है।

**फलोत्पादन**

- ❖ नए बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30-40 किलो ग्राम सड़ी गोबर की खाद, एक किलो ग्राम नीम की खली तथा आधी गड्ढा से निकली मिट्टी मिलकर भरे। गड्डे को जमींन से 15-20 सेमी. उचाई तक भरना चाहिए।
- ❖ फलों की भण्डारण छमता बढाने हेतु तुड़ाई पूर्व चौसा किस्म तथा अन्य देर से पकने वाली किस्मो के लिए 10 दिनों के अंतराल पर तीन छिडकाव डाईहाइड्रेटेड कैल्सियम क्लोराइड 221 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का करना चाहिए।
- ❖ लीची के बागो की आवश्यकतानुसार फल तुड़ाई के पश्चात डालो की छटाई करे।
- ❖ यदि नीबू में फल फटने की समस्या हो तो पोटैशियम सल्फेट के 4 प्रतिशत घोल का छिडकाव करे।
- ❖ पपीते के बाग की साफ सफाई करे तथा फावड़े द्वारा गुड़ाई भी करे।

**फूलो की खेती**

- ❖ गर्मी वाले मौसमी फूलो जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सुन्फ्लोवर, कोचिया, नारंगी, गोमफ्रिना आदि के पौधों की आवशयकातानुसार सिचाई करें।
- ❖ गुलाब, रजनीगंधा, देशी गुलाब, बेला, लिली एवं गेंदा में समय – समय पर निराई व गुड़ाई एवं खेत में नमी बनाए रखने के लिए हल्की सिंचाई करते रहें।

| संपर्क सूत्र | | | |
|---|---|---|---|
| **नाम** | **पद** | **विषय** | **मो.नं.** |
| **डा0 विवेक प्रताप सिंह** | विषय वस्तु विशेषज्ञ | पशुपालन | **07651922058** |
| **डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव** | विषय वस्तु विशेषज्ञ | उद्यान | **08787264166** |
| **डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय** | विषय वस्तु विशेषज्ञ | मृदा विज्ञान | **09621437547** |
| **श्री अवनीश कुमार सिंह** | विषय वस्तु विशेषज्ञ | सस्य विज्ञान | **09792099943** |
| **श्रीमती श्वेता सिंह** | विषय वस्तु विशेषज्ञ | गृह विज्ञान | **09453158193** |